विचार बिन्दु

स्वयं प्रकाशित दीप को भी प्रकाश के लिए तेल और बत्ती का जतन करना पड़ता है बुद्धिमान भी अपने विकास के लिए निरंतर यत्न करते हैं। कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता केवल उसको उपयुक्त काम में लगाने वाला ही कठिनाई से मिलता है। -शुक्रनीति

अशालीन अभिव्यक्तियों का दौर

हम कैसे समय में रह रहे हैं? देश को आज़ाद हुए लगभग आठ दशक होने को हैं। इस बीच हमारे यहां साक्षरता और शिक्षा दोनों में काफी इज़ाफ़ा हुआ है। इससे संभावना तो यह बनती है कि हम अपने लोक व्यवहार में पहले से अधिक शिष्ट और शालीन हों, लेकिन बहुत बार ऐसा नज़र आता नहीं है। इसका उलट नज़र आता है। जैसे हम आगे नहीं पीछे को जा रहे हैं।

हाल में एक रील देखी जिसमें एक महिला (मैं जानबूझकर उनके साथ भद्र विशेषण नहीं जोड़ रहा हूं!) विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास दीवार में एक खिड़की रहती थी को हाथ में लेकर उसे विष्टा बता रही हैं। वैसे उन्होंने यह तत्सम शब्द काम में नहीं लिया है। उन्होंने जो शब्द काम में लिया है वह आम बोलचाल का है और उसमें ढाई बार ट वर्ण आता है। मेरी शालीनता उसे यहां लिखने की अनुमति नहीं दे रही। जिन्हें नहीं मालूम उन्हें बताता चलूं कि विनोद कुमार शुक्ल हिंदी के एक अत्यंत वरिष्ठ और सम्मानित रचनाकार थे और उनका यह उपन्यास बहुत चर्चित रहा है। इस उपन्यास की चर्चा इस वजह से भी रही कि प्रकाशक के अनुसार छह माह में इस उपन्यास की 86,000 प्रतियां बिकीं और प्रकाशक ने लेखक को तीस लाख रुपये की रॉयल्टी दी। यह जानकारी मैं केवल उन पाठकों के लिए दे रहा हूं जो विनोद कुमार शुक्ल के नाम और उनके इस उपन्यास से नितांत अपरिचित हैं। मेरा मानना है कि किसी किताब का बहुत ज़्यादा बिकना और उसके लेखक को बड़ी रॉयल्टी मिलना किसी कृति की श्रेष्ठता का एकमात्र परिचायक नहीं हो सकता। साहित्य और कलाओं की दुनिया में ठाहण करने वाले की पसंद नापसंद, उसकी रुचियों, उसके संस्कारों, उसके प्रशिक्षण आदि की बड़ी भूमिका होती है। एक ही कृति सबको पसंद आ जाए, यह कभी सम्भव ही नहीं होता। किसी को कोई कृति बहुत पसंद आती है तो किसी और को वह बिल्कुल भी पसंद नहीं आती। यह बहुत सामान्य और स्वाभाविक बात है। लेकिन अपनी नापसंदगी को आप एक भदेस शब्द से व्यक्त करें, यह तो अच्छी बात नहीं।

उक्त महिला की इस अभिव्यक्ति से मुझे अनायास उर्दू के एक अत्यंत कुख्यात शायर की याद आ गई। बहुत संभव है कि मेरे पाठकों में से अनेक ने उनके बारे में सुना भी न हो। विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार उनका वास्तविक नामशेख़ बाक़र अली 'चिरकीन'था। वे उन्नीसवीं सदी के आरम्भिक दौर के लखनऊ स्कूल के शायर माने जाते हैं। उनका समय लगभग 1797-1832 के बीच माना जाता है। उर्दू-फ़ारसी में चिरकीन शब्द गंदगी, मैल या मल से जुड़ा हुआ है। शेख़ बाकर अली ने यह तख़ल्लुस भी जान-बूझकर चुना था। मूलतः वे एक संज़ीदा शायर थे, लेकिन उनका बहुत सारा कलाम ओरों ने चुराकर अपने-अपने नामों से प्रचारित-प्रसारित कर दिया। हद् तो तब हुई जब उनकी वह डायरी जिसमें उनका सारा कलाम लिखा हुआ था, किसी ने चुरा कर अपने नाम से प्रकाशित करवा ली। इसकी परिणति इस बात में हुई कि शेख़ बाकर अली जब हैदराबाद के एक मुशायरे में अपना कलाम पढ़ने लगे, उसी चुराए हुए किंतु प्रकाशित दीवान के आधार पर उन्हें दूसरों का कलाम पढ़ने का आरोप लगाकर अपमानित किया गया। तब से बाकर अली ने यह प्रण लिया कि अब वे ऐसा कुछ लिखा करेंगे जिसे कोई चुराने का साहस ही न कर सके। और इस तरह दुनिया को मिला एक अनूठा शायर - चिरकीन। उनकी बदनामी -और प्रसिद्धि- दोनों का कारण यह था कि उन्होंने शायरी में उन विषयों को शामिल किया जिन्हें सभ्य अदब में वर्जित माना जाता था।

समाज में भाषिक हिंसा बढ़ती जा रही है। बहुत बार तो मुझे लगता है कि हमारे राजनीतिक दल भी अपने उत्साही समर्थकों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करते हैं, ताकि वे प्रतिपक्षियों को चुप और निष्क्रिय कर सकें। कुछ समय तक तो वे ऐसा करने में कामयाब भी रहे, लेकिन अब दूसरे पक्ष ने भी उन्हीं औज़ारों और हथियारों का प्रयोग करना शुरु कर दिया है। इससे माहौल और दूषित हुआ है।

यह सारी चर्चा इसलिए कि आजकल मैं अपने चारों तरफ उन्हीं चिरकीन साहब के वंशजों को पाता हूं। एक उदाहरण मैंने ऊपर दिया। इसलिए भी दिया कि सामान्यतः हम महिलाओं से अधिक शालीनता की उम्मीद रखते हैं। अगर वे कोई अभद्र बात कहें तो हम अधिक आहत होते हैं। जितनी शालीनता की उम्मीद हम महिलाओं से करते हैं लगभग उतनी ही हम उनसे भी करते हैं जो शिक्षा के काम में जुटे हैं। अगर हमें पता चले कि कोई शिक्षक है, तो हम स्वतः मान लेते हैं कि उसकी भाषा संस्कारित और शालीन होगी। अगर किसी के बारे में यह पता चले कि वह विश्वविद्यालय का प्रोफ़ेसर है तब तो कहना ही क्या! उससे तो हम भाषा के श्रेष्ठतम रूप की अपेक्षा करने लगते हैं। आखिर उसने इतना ज्ञान अर्जित किया, और अपनी अभिव्यक्ति को परिष्कृत किया है, तभी तो वह इस उच्चतम पद पर आसीन है। हम मानकर चलते हैं कि अगर उसे कोई अप्रिय बात भी कहनी होगी तो वह उसे अत्यधिक शालीन तरीके से ही कहेगा। अंग्रेज़ी में तो ऐसी अनेक किताबें भी मेरे देखने में आई हैं जिनमें विद्वान लोगों द्वारा कही गई अप्रिय बातों को संकलित किया गया है। इन किताबों को याद करते हुए मुझे अनायास मिर्ज़ा ग़ालिब याद आ जाते हैं। उनका एक शेर है: "कितने शीरीं हैं तेरे लब कि रक़ीब/ गालियाँ खा के बे-मज़ा न हुआ"। यहां शायर अपने प्रतिद्वंद्वी से कह रहा है कि तेरे होंठ इतने मीठे हैं कि उनसे निकलने वाली गालियों को सुनते हुए भी मुझे बुरा नहीं लगा। अगर कोई विद्वान भी पत्थर मार शैली में अपनी असहमति या नाराज़गी व्यक्त करे तो फिर वह काहे का विद्वान।

लेकिन हमारा वर्तमान कुछ ऐसा है कि लोग अपनी नापसंदगी या नाराज़गी व्यक्त करने के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तैयार बैठे रहते हैं। तब उन्हें न अपनी शिक्षा का ध्यान आता है न अपने पद की गरिमा का। इन दिनों एक प्रतिष्ठित प्रोफ़ेसर महोदय सोशल मीडिया पर जिस तरह की भाषा में स्वयं को प्रस्तुत कर रहे हैं उससे कम से कम मैं तो बहुत आहत महसूस कर रहा हूं। अपने से भिन्न वैचारिक धरातल पर खड़े लोगों के लिए उन्होंने लिखा है: "हर तरह की उचक्कई और लंपटगीरी करने वाला यह गिरोह भयानक है। आप इसे संवाद लायक समझते हैं, मैं इसे थूकने लायक नहीं समझता।" मेरा मानना है कि हम सब अपना-अपना वैचारिक पक्ष चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं। यह भी कि हमें अपने से भिन्न पक्ष को नापसंद करने का भी पूरा अधिकार है। लेकिन कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति, जिसकी प्रतिष्ठा एक विद्वान की है, अगर अपने से भिन्न मत वालों के लिए यह कहे कि मैं उन्हें इस काबिल भी नहीं समझता कि उन पर थूकूं, तो लगता है कि यह तो अति है। इसके बाद तो बस यही बचता है कि आप अपनी असहमति आदिम शैली में ईंट पत्थरों से व्यक्त करें। फिर क्या मतलब हुआ पढ़ाई लिखाई का?

भारत में वैचारिक भिन्नता को सदा सम्मान दिया गया है। हमारी परंपरा तो वह रही है जो इस संस्कृत सूक्ति में अभिव्यक्त हो रही है: "मुण्डेमुण्डेमतिर्भिन्ना, कुण्डेकुण्डेनवंपयः।/ जातौजातौनवाचाराः, नवा वाणी मुखेमुखे।।" इसका सरल अर्थ यह है कि जिस प्रकार हर जगह के पानी का स्वभाव अलग-अलग होता है उसी प्रकार हर व्यक्ति का सोच और अभिव्यक्ति का तरीका भी अलग-अलग होता है। लेकिन इधर हम देखते हैं कि सहिष्णुता का स्थान आक्रामकता लेती जा रही है। अगर आपका विचार या पक्ष वही नहीं है जो मेरा है, तो फिर आप मेरे शत्रु हैं और मुझसे आप किसी शालीनता या भले व्यवहार की उम्मीद न रखें। समाज में भाषिक हिंसा बढ़ती जा रही है। बहुत बार तो मुझे लगता है कि हमारे राजनीतिक दल भी अपने उत्साही समर्थकों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करते हैं, ताकि वे प्रतिपक्षियों को चुप और निष्क्रिय कर सकें। कुछ समय तक तो वे ऐसा करने में कामयाब भी रहे, लेकिन अब दूसरे पक्ष ने भी उन्हीं औज़ारों और हथियारों का प्रयोग करना शुरु कर दिया है। इससे माहौल और दूषित हुआ है।

हमें विचार करना होगा कि अपने से भिन्न मत के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो, और अगर हम असहमत भी हों तो उस असहमति को किस तरह व्यक्त करें।अशालीन अभिव्यक्ति संवाद के सारे दरवाज़े बंद कर देती हैं, इसे भी याद रखा जाना चाहिए।

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

भर्ती परीक्षा प्रणाली को पारदर्शी और सुरक्षित बनाने से बदली तस्वीर

सरकार ने इस चुनौती को युवाओं के भविष्य और राज्य की प्रशासनिक साख से जोड़कर देखा, इसी सोच के साथ परीक्षा माफियाओं के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई

अरुण चतुर्वेदी

भर्ती परीक्षाओं में पेपर लीक, नकल गिरोह और संगठित परीक्षा माफियाओं की गतिविधियों को लेकर राजस्थान लंबे समय तक राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना रहा। लाखों युवाओं की मेहनत पर पानी फेरने वाली इन घटनाओं ने प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिये थे। अनेक प्रतिभाशाली युवा वर्षों तक तैयारी करने के बावजूद स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते रहे। ऐसे माहौल में वर्तमान राज्य सरकार द्वारा परीक्षा प्रणाली को पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए अपनाई गई सख्त नीति से अब व्यवस्था की तस्वीर बदली है।

राजस्थान में वर्तमान सरकार के कार्यकाल में पेपर लीक और नकल माफियाओं के विरुद्ध कठोर एवं संगठित कार्रवाई की गई है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अब तक बिना किसी व्यवधान के राज्य की 351 परीक्षाओं का सफल आयोजन किया जा चुका है। यह अपने भविष्य को प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से सुरक्षित करना चाहने वाले लाखों युवाओं के विश्वास की पुर्नस्थापना हैं।

पेपर लीक केवल एक अपराध नहीं, बल्कि यह प्रतिभा, परिश्रम और सामाजिक न्याय के विरुद्ध किया जाने वाला संगठित हमला है। जब कोई परीक्षा प्रश्नपत्र लीक होता है तो उसका सीधा नुकसान वर्षों से कठिन परिश्रम करने वाले गरीब और मेहनती विद्यार्थी को होता है। धनबल और आपराधिक नेटवर्क के सहारे कुछ लोग व्यवस्था को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। पिछले वर्षों में यह स्थिति इतनी गंभीर हो गई थी कि प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रति युवाओं का भरोसा लगातार कमजोर पड़ रहा था।

वर्तमान सरकार ने इस चुनौती को युवाओं के भविष्य और राज्य की प्रशासनिक साख से जोड़कर देखा। इसी सोच के साथ परीक्षा माफियाओं के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई गई। विशेष अभियान चलाकर संगठित गिरोहों की पहचान की गई। कई आरोपियों को गिरफ्तार किया गया तथा तकनीकी निगरानी और खुफिया तंत्र को मजबूत बनाया गया। राजस्थान पुलिस की स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने इस पूरे अभियान में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राज्य सरकार द्वारा एसओजी को पूरी स्वतंत्रता और संसाधन उपलब्ध कराए जाने के कारण परीक्षा माफियाओं के खिलाफ लगातार प्रभावी कार्रवाई संभव हो सकी। अनेक मामलों में एसओजी ने राजस्थान ही नहीं, बल्कि अन्य राज्यों तक फैले हुए नेटवर्क का भी खुलासा किया।

पिछले दिनों राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित परीक्षा नीट में गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ एसओजी की कार्रवाई उल्लेखनीय रही। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा आयोजित इस परीक्षा में अनियमितता फैलाने वाले तत्वों को पकड़ने के लिए एसओजी ने दिन-रात अभियान चलाया। तकनीकी विश्लेषण, साइबर ट्रैकिंग और गहन पूछताछ के माध्यम से संदिग्धों तक पहुंच बनाई गई तथा उन्हें गिरफ्तार कर आगे की जांच के लिए केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंपा गया।

■ राजस्थान में वर्तमान सरकार के कार्यकाल में पेपर लीक और नकल माफियाओं के विरुद्ध कठोर एवं संगठित कार्रवाई की गई है, इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अब तक बिना किसी व्यवधान के राज्य की 351 परीक्षाओं का सफल आयोजन किया जा चुका है

इससे यह स्पष्ट संदेश गया कि राजस्थान अब परीक्षा माफियाओं के लिए सुरक्षित ठिकाना नहीं रहा।

वर्तमान राज्य सरकार के ढ़ाई वर्ष के कार्यकाल में 351 परीक्षाओं का शांतिपूर्ण और व्यवस्थित आयोजन होना प्रशासनिक दक्षता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। इन परीक्षाओं में लाखों अभ्यर्थियों ने भाग लिया और अधिकांश परीक्षाएं बिना किसी विवाद या बड़े व्यवधान के संपन्न हुईं। यह स्थिति उन वर्षों से बिल्कुल अलग दिखाई देती है जब हर भर्ती परीक्षा के बाद किसी न किसी प्रकार के पेपर लीक या नकल की आशंका सामने आने लगती थी। सरकार ने अपराधियों की गिरफ्तारी तक सीमित रहने के बजाय पूरी परीक्षा प्रणाली में सुधार के प्रयास किए। प्रश्नपत्रों की गोपनीयता, परिवहन व्यवस्था, परीक्षा केंद्रों की निगरानी, बायोमेट्रिक सत्यापन, सीसीटीवी कैमरे, फ्लाइंग स्क्वॉड और साइबर मॉनिटरिंग जैसे अनेक उपायों को प्रभावी ढंग से लागू किया गया। इससे परीक्षा प्रक्रिया में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बढ़ी है।

पेपर लीक जैसी घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए प्रभावी प्रशासनिक कार्रवाई के साथ मजबूत कानूनी ढांचा भी आवश्यक होता है। वर्तमान सरकार ने इस दिशा में कठोर कानूनों और सख्त दंडात्मक प्रावधानों पर भी विशेष ध्यान दिया। संगठित अपराध के रूप में परीक्षा माफियाओं की गतिविधियों को देखते हुए पुलिस और जांच एजेंसियों को अधिक अधिकार दिए गए। इसके परिणामस्वरूप अब आरोपियों को संगठित आर्थिक और सामाजिक अपराध के रूप में चिन्हित किया जा रहा है। इससे अपराधियों में भय का वातावरण बना है तथा भर्ती परीक्षाओं में अवैध गतिविधियों में शामिल नेटवर्क कमजोर पड़ते दिखाई दे रहे हैं।

आज के डिजिटल युग में परीक्षा माफिया भी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। ब्लूटूथ डिवाइस, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट, फर्जी दस्तावेज और साइबर नेटवर्क के माध्यम से संगठित धोखाधड़ी की कोशिशें की जाती रही हैं। इसे देखते हुए राज्य सरकार ने तकनीक आधारित निगरानी तंत्र को मजबूत किया है। साइबर सेल, डिजिटल सर्विलांस और डेटा विश्लेषण के माध्यम से संदिग्ध गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जा रही है।

कई मामलों में परीक्षा से पहले ही संदिग्ध नेटवर्क का खुलासा कर कार्रवाई की गई। यही कारण है कि बड़ी परीक्षाओं में भी प्रशासन का मजबूत नियंत्रण दिखाई दिया। प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता प्रशासनिक विषय के साथ ही सामाजिक मनोविज्ञान से भी जुड़ा मुद्दा है। जब युवाओं को यह विश्वास मिलता है कि उनकी मेहनत का निष्पक्ष मूल्यांकन होगा, तब उनमें सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास बढ़ता है। राजस्थान में हाल के वर्षों में यही परिवर्तन दिखाई देने लगा है।

अब प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों और उनके परिवारों में यह भरोसा मजबूत हो रहा है कि सरकार परीक्षा माफियाओं के खिलाफ गंभीर है और किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। यह विश्वास युवाओं को निराशा से बाहर निकालने और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हालांकि वर्तमान उपलब्धियां उत्साहजनक हैं, लेकिन यह भी सच है कि परीक्षा माफिया एक ऐसा संगठित अपराध है जो अवसर मिलते ही नए रूप में सामने आने का प्रयास करता है। इसलिए जांच एजेंसियां निरंतर सतर्क है। परीक्षा प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखकर तथा तकनीकी सुरक्षा को लगातार अपडेट करने के प्रयास जारी है। इस लड़ाई में समाज को भी भागीदार बनना होगा। अभिभावकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को यह समझना होगा कि शॉर्टकट और अवैध साधनों से प्राप्त सफलता अंततः नुकसान पहुंचाती है। ईमानदार प्रतिस्पर्धा ही किसी भी राज्य की प्रशासनिक गुणवत्ता और सामाजिक प्रगति का आधार बन सकती है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में पेपर लीक और परीक्षा माफियाओं के विरुद्ध अपनाई गई सख्त नीति ने एक सकारात्मक बदलाव का वातावरण तैयार किया है। करीब 351 परीक्षाओं का सफल आयोजन, एसओजी की सक्रिय कार्रवाई, नीट परीक्षा में गड़बड़ी करने वालों की गिरफ्तारी इस बात का संकेत है कि राज्य सरकार परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है।यह बदलाव परिश्रम के बल पर जीवन में आगे बढ़ने वाले लाखों युवाओं के सपनों की सुरक्षा का प्रयास है। राज्य सरकार इसी दृढ़ता, पारदर्शिता और तकनीकी दक्षता के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं को निष्पक्ष और भरोसे का प्रतीक बनाने के सार्थक प्रयास कर रही है।

अरुण चतुर्वेदी,
अध्यक्ष, राज्य वित्त आयोग।

सभ्यताओं की जीवित स्मृति : लूव्र से अल्बर्ट हॉल तक, संग्रहालयों में धड़कता है इतिहास

अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस, 18 मई पर विशेष......

अभिलाषा गर्ग

पेरिस का लूव्र म्यूजियम, लॉस एंजिलिस का गेटी म्यूजियम, लंदन का ब्रिटिश म्यूजियम - दुनिया के ये प्रसिद्ध संग्रहालय केवल पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की जीवित स्मृतियाँ माने जाते हैं। हर वर्ष लाखों लोग इन संग्रहालयों में इतिहास को देखने नहीं, बल्कि उसे महसूस करने पहुँचते हैं। लेकिन यदि भारत के संदर्भ में बात की जाए, तो राजस्थान के संग्रहालय भी अपनी भव्यता, ऐतिहासिक महत्व और सांस्कृतिक समृद्धि में किसी अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय से कम नहीं हैं। जयपुर का अल्बर्ट हॉल म्यूजियम इसकी सबसे बड़ी मिसाल है, जो आज भी दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी विरासत, वास्तुकला और दुर्लभ संग्रह से आकर्षित करता है।

हर वर्ष 18 मई को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस हमें यही याद दिलाता है कि संग्रहालय केवल पुरानी वस्तुओं का संग्रह नहीं बल्कि समाज की सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक चेतना के केंद्र हैं। इसकी शुरुआत वर्ष 1977 में इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूज़ियम द्वारा की गई थी। समय के साथ संग्रहालयों की भूमिका भी बदली है। अब वे केवल इतिहास को सुरक्षित नहीं रखते बल्कि शिक्षा, शोध, सांस्कृतिक संवाद और पर्यटन को भी नई दिशा देते हैं।

राजस्थान : जहाँ इतिहास दीवारों पर नहीं, वातावरण में दिखाई देता है-

भारत में यदि किसी राज्य को ओपन म्यूज़ियम कहा जाए, तो वह राजस्थान है। यहाँ का हर शहर अपने भीतर इतिहास की एक अलग परत समेटे हुए है। किले, महल, हवेलियाँ और संग्रहालय मिलकर ऐसा सांस्कृतिक संसार रचते हैं, जहाँ अतीत आज भी जीवित महसूस होता है।

जयपुर स्थित अल्बर्ट हॉल म्यूजियम राजस्थान का सबसे पुराना संठाहालय है, जिसकी स्थापना वर्ष 1887 में हुई थी। इंडो-सारासेनिक शैली में निर्मित यह भवन रात की रोशनी में किसी यूरोपीय विरासत भवन जैसा दिखाई देता है। जिस प्रकार पेरिस का लूव्र म्यूजियम अपनी कला और ऐतिहासिक संग्रह के लिए प्रसिद्ध है, उसी प्रकार अल्बर्ट हॉल भी राजस्थानी लघु चित्रकला, धातु कला, प्राचीन हथियारों, पारंपरिक वस्त्रों और दुर्लभ कलाकृतियों के विशाल संग्रह के लिए जाना जाता है। यहाँ सुरक्षित मिस्त्र की ममी आज भी पर्यटकों के आकर्षण का सबसे बड़ा केंद्र है।

लॉस एंजिलिस के गेटी म्यूजियम को उसकी कला संरक्षण तकनीकों और प्रदर्शनी शैली के लिए सराहा जाता है, वहीं अल्बर्ट हॉल राजस्थान की लोक संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहरों को जिस जीवंत तरीके से प्रस्तुत करता है, वह उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट बनाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि वैश्विक स्तर पर प्रचार और आधुनिक प्रस्तुति को और विस्तार मिले, तो अल्बर्ट हॉल विश्व के प्रमुख संग्रहालयों की सूची में और अधिक प्रभावशाली पहचान बना सकता है।

केवल अल्बर्ट हॉल ही नहीं, पूरा राजस्थान है एक सांस्कृतिक संग्रहालय-

उदयपुर का सिटी पैलेस म्यूजियम मेवाड़ की शौर्यगाथा, राजसी जीवनशैली और ऐतिहासिक विरासत को बेहद भव्य तरीके से प्रस्तुत करता है। पिछोला झील के किनारे स्थित यह संग्रहालय इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संगम माना जाता है।

जोधपुर का मेहरानगढ़ फोर्ट म्यूजियम दुनिया के बेहतरीन किला-संग्रहालयों में गिना जाता है। यहाँ संरक्षित पालकियाँ, शाही हौदे, युद्ध सामठाी और राजसी पोशाकें मारवाड़ के गौरवशाली इतिहास की झलक प्रस्तुत करती हैं। कई विदेशी इतिहासकार इसे भारत के सबसे व्यवस्थित संग्रहालयों में शामिल करते हैं।

बीकानेर स्थित गंगा राजकीय म्यूजियम पश्चिमी राजस्थान की पुरातात्विक और सांस्कृतिक धरोहरों का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ गुप्तकालीन मूर्तियाँ, प्राचीन सिक्के, हड़प्पा सभ्यता से जुड़ी सामग्री और राजस्थानी मिनिएचर पेटिंग्स सुरक्षित रखी गई हैं।

वहीं उदयपुर का भारतीय लोक कला मण्डल यह साबित करता है कि संग्रहालय केवल राजाओं और युद्धों की कहानियाँ नहीं बताते बल्कि लोक संस्कृति और आम जनजीवन को भी संरक्षित करते हैं। यहाँ की कठपुतली कला, लोकवाद्य और पारंपरिक वेशभूषाएँ राजस्थान की जीवंत सांस्कृतिक आत्मा को दर्शाती हैं।

आधुनिक दौर में संग्रहालयों की बदलती पहचान-

आज दुनिया भर के संग्रहालय डिजिटल तकनीक की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। वर्चुअल टूर, ऑडियो गाइड, इंटरैक्टिव स्क्रीन और डिजिटल आर्काइव ने इतिहास को नई पीढ़ी के लिए अधिक रोचक बना दिया है। राजस्थान के संग्रहालय भी अब आधुनिक तकनीक के साथ खुद को विकसित कर रहे हैं।

विशेषज्ञ मानते हैं कि संग्रहालय किसी भी समाज की सांस्कृतिक मेमोरी होते हैं। वे केवल अतीत को संरक्षित नहीं करते, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को उनकी पहचान से जोड़ते हैं।

विरासत का संरक्षण ही भविष्य की सबसे बड़ी जिम्मेदारी-

आज जब दुनिया तेज़ी से आधुनिकता की ओर बढ़ रही है, तब सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण पहले से अधिक आवश्यक हो गया है। अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस हमें यह संदेश देता है कि इतिहास केवल किताबों में नहीं, बल्कि उन धरोहरों में जीवित रहता है जिन्हें संग्रहालय सहेजकर रखते हैं। राजस्थान के संग्रहालय इस बात का प्रमाण हैं कि भारत की सांस्कृतिक समृद्धि किसी भी अंतरराष्ट्रीय विरासत से कम नहीं है। और जैसे विश्वप्रसिद्ध संग्रहालयों की तरह राजस्थान के संग्रहालय भी इतिहास, कला और संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। फर्क केवल इतना है कि दुनिया ने उन्हें अभी उतनी गहराई से देखना शुरू किया है।

इतिहास बदले का नहीं, सबक का विषय-इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय म्यूजियम दिवस की थीम 'यूनाइटिंग ए डिवाइडिंग वर्ल्ड' घोषित की गई है। इतिहास का अध्ययन कर युवा अपने धर्म, नस्ल, राष्ट्र के प्रति हुए अन्याय का बदला लेने के लिए आतुर न हो, भविष्य में किसी भी पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष के दमन की कोशिश न हो, इसके लिए युवाओं में जिम्मेदार विश्व नागरिक बन कर इस संसार की समस्याओं को मानवता की साझा समस्याएं मान कर शांतिपूर्वक ढंग से बातचीत के माध्यम से समाधान निकालने की मानसिकता विकसित करना इस दिवस को मनाना सार्थक करेगा।

वैश्विक सभ्यताओं के इतिहास का जितना हिस्सा लाखों पुस्तकों, पांडुलिपियों में नहीं है, उससे ज्यादा शिलालेखों, सिक्कों, उस जमाने के तकनीकी गैजेट्स आदि में भरा पड़ा है और आज ये म्यूजियम्स की शोभा बढ़ा रहे हैं। मौर्य काल का पूरा और वास्तविक इतिहास शिलालेखों से पता चला है। सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी लेकिन शहरों के उत्खनन से पूरा इतिहास शीशे की तरह साथ देखा और पढ़ा जा सकता है। इतिहास लेखक के अपने पूर्वाग्रह, लालच और दबाव होते हैं लेकिन म्यूजियम में रखी सामठाी सच्चाई का प्रतीक होती है।

-अभिलाषा गर्ग,
ड्रामेटिक एंड परफोर्मिंग आर्ट की अध्येयता है, वर्तमान में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सुजस स्टूडियो में एंकर है।

राशिफल

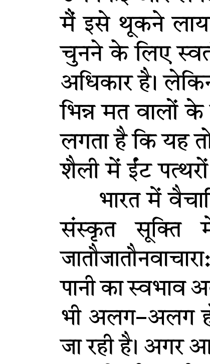

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 18 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2083, रोहिणी नक्षत्र दिन 11:32 तक, सुकर्मा योग रात्रि 9:48 तक, बालव करण प्रातः 7:42 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:05 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मेष, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। अमृत सिद्धि योग दिन 11:32 से सूर्योदय तक है। आज चन्द्र दर्शन, दक्षिण श्रृंगोन्नति, रोहिणी व्रत (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:22तक, शुभ 9:02 से 10:43 तक, चर 2:04 से 3:44 तक, लाभ-अमृत 3:44 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:05

मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
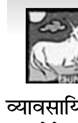
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कर्क
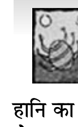
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

सिंह
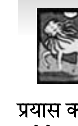
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा, उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
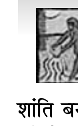
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।